UNIT — III

Ques:- Time theory of Indian Music

→ **रागों का समय** → भारतीय रागों में यह विशेषता है कि उनके गाने और बजाने का एक निश्चित समय होता है। अपने निश्चित समय पर ही प्रत्येक राग आकर्षक तथा मधुर लगते हैं। बहुत-से ऐसे राग ऐसे होते हैं जो किसी विशेष समय या ऋतु में गाये और बजाये जाते हैं। जैसे :- वर्षा ऋतु में मल्हारों का गायन, वसन्त ऋतु में बहार, वसन्त आदि के गाने और बजाने में विशेष आनन्द आता है। इन रागों के गीतों को अधिकतर इन ऋतुओं में तो गाया ही जाता है परन्तु इसके अलावा इनको प्रत्येक मौसम में दिन या रात को प्रहरों में बाँट दिया गया है तथा प्रत्येक हिन्दुस्तानी राग दिन अथवा रात के किसी विशेष प्रहर में गाया और बजाया जाता है। राग के समय को निर्धारित करने के लिए कुछ नियम हैं, जैसे - पूर्व राग, उत्तर राग, सन्धिप्रकाश राग, अध्वदर्शक स्वर आदि। इन नियमों में से नीचे पूर्व राग, उत्तर राग तथा सन्धिप्रकाश रागों का वर्णन किया जाता है।

पूर्व राग तथा उत्तर राग - विद्वानों ने सप्तक के 7 स्वरों को दो भागों में बाँट दिया है। पहला भाग 'सा' से 'म' तक अर्थात् स रे ग म तथा दूसरा 'प' से 'सा' तक अर्थात् प ध नि सा है। इन्ही दो विभागों को सप्तक का

Scanned with CamScan

3

अर्थ यह है कि कुछ रागों के वादी स्वर तो पूर्वांग में हैं परन्तु उनके गाने का समय उत्तरांग में अर्थात् 12 बजे रात से 12 बजे दिन के अन्दर है। उदाहरण के लिए - राग भैरवी में 'म' वादी है जो सप्तक के पूर्वांग में है। परन्तु इसके गाने का समय सुबह का प्रथम प्रहर है जो उतरांग समय होता है। वास्तव में पूर्वांग वादी होने के कारण इस राग को 12 बजे दिन से 12 बजे रात के अन्दर ही गाना अथवा बजाना चाहिए। इस प्रकार हमारे राग के गाने का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है जो पूर्वांग समय माना जाता है। इन सब उपवादों को देखते हुए विद्वानों ने सप्तक के पूर्वांग तथा उतरांग स्वरों का विस्तार कुछ बढ़ा दिया है। अब पूर्वांग को बढ़ाकर 'सा' से 'प' तक अर्थात् 'स रे ग म प' कर दिया है तथा उतरांग को बढ़ाकर 'म' से 'सा' तक अर्थात् 'म प ध नि सा' कर दिया है। इस प्रकार मध्यम तथा पंचम स्वर सप्तक के दोनों विभागों में आ गये है। अब सप्तक का विभाजन इस प्रकार है :-

पूर्वांग	उतरांग
सा रे ग म प	म प ध नि सा

जिन रागों में मध्यम तथा पंचम स्वर वादी होते हैं उनका समय बतलाने में कुछ कठिनाई पड़ती है क्योंकि ये स्वर दोनों विभागों के अन्तर्गत आते हैं इसलिए रागों का समय हमको मालूम कर लेना चाहिए।

Scanned with CamScanner

सन्धि - प्रकाश राग → जो राग रात और दिन की सन्धि वेला में गाये अथवा बजाये जाते हैं उन्हें सन्धि - प्रकाश राग कहकर पुकारा जाता है दिन और रात की सन्धि 24 घण्टे में दो बार होती है। एक सुबह जब रात के बाद दिन निकलता है तथा दूसरी शाम को जब सूर्य डूबता है और रात आती है। सन्धि - प्रकाश का समय विद्वानों ने 4 बजे से 7 बजे तक का माना है अर्थात सुबह 4 बजे से 7 बजे तक तथा शाम को 4 से 7 बजे तक का समय सन्धि - प्रकाश राग का समय माना जाता है। सुबह तथा शाम को ऐसे समय में गाया और बजाया जानेवाला राग ही सन्धि - प्रकाश है।

सन्धि - प्रकाश राग में यह विशेषता पायी जाती है कि उसमें ऋषभ और धैवत स्वर कोमल लगते हैं। भैरवी, कालिंगड़ा, पूर्वी आदि। इसके साथ ही इन रागों में गान्धार स्वर शुद्ध होना आवश्यक है। कुछ राग ऐसे हैं जो इस विशेषता के अपवादस्वरूप हैं, जैसे - राग मारवा इस राग में ऋषभ स्वर कोमल लगता है लेकिन धैवत स्वर शुद्ध है। इन अपवादों को देखते हुए कुछ विद्वानों ने सन्धि - प्रकाश राग के लिए केवल ऋषभ स्वर का कोमल होना आवश्यक समझा है, धैवत स्वर कोमल हो अथवा शुद्ध, परन्तु गान्धार स्वर को शुद्ध होना चाहिए।

अब हम कह सकते हैं कि सन्धि - प्रकाश रागों में ऋषभ स्वर कोमल होना चाहिए और गान्धार स्वर शुद्ध होना चाहिए। धैवत स्वर कोमल हो सकता है अथवा शुद्ध। सन्धि - प्रकाश रागों ~~में अन्तर्गत रखते हैं~~ ऋषभ स्वर वर्जित नहीं होता, क्योंकि इस स्वर पर रागों

का वर्गीकरण होता है। भैरव, पूर्वी तथा मारवा थाट के राग सन्धि-प्रकाश रागों के अन्तर्गत आते हैं। उदाहरण के लिए सुबह के सन्धि-प्रकाश राग भैरव, रामकली, परज, जोगिया, कालिंगड़ा, भैरव के अन्य प्रकार आदि हैं तथा सांयकाल के सन्धि-प्रकाश राग पूर्वी, मारवा, धनाश्री, पूरिया एवं श्री आदि हैं।

Ques:- Margi and Desi Sangeet

→ प्राचीन काल में संगीतज्ञों ने शास्त्रीय संगीत को दो भागों में विभाजित किया था।

(1) मार्गी अथवा मार्ग संगीत।

(2) देशी संगीत अथवा गान।

→ मार्गी अथवा मार्ग संगीत :→ अति प्राचीनकाल में ऋषियों ने जब यह देखा कि संगीत में मन को एकाग्र करने कि एक अत्यन्त प्रभावशाली शक्ति है तभी से वे इस कला का प्रयोग परमेश्वर की आराधना के लिए करने लगे। संगीत परमेश्वर-प्राप्ति का प्रमुख साधन माना जाने लगा। लोगों का विचार था कि 'ॐ' शब्द ही नाद ब्रह्म है। संगीत का उद्देश्य निश्चित करने के बाद संगीतज्ञों ने इसे कड़े नियमों से बांधने का प्रयत्न किया। भरत मुनि ने इस नियमबद्ध संगीत को, जो ईश्वर प्राप्ति का साधन माना जाता है, मार्गी अथवा मार्ग संगीत कहकर पुकारा।

मार्गी संगीत ब्रह्म जी भरत मुनि को सिखाया। भरत मुनि ने शंकर भगवान के समक्ष इसका प्रदर्शन गन्धर्व और अप्सराओं से कराया। इस संगीत को केवल गन्धर्व ही गाया करते थे इसलिए इसे 'गान्धर्व संगीत' भी कहकर पुकारा जाता है। मार्गी संगीत अचल माना जाता है, क्योंकि इसमें थोड़ा-सा भी परिवर्तन नहीं किया जा सकता था। उसके नियम तथा बन्धन अत्यन्त कठोर थे। नियमों का पालन करते थे। परमेश्वर-प्राप्ति उसका मुख्य उद्देश्य था तथा

Scanned with CamScan

लोकतंत्र से उसका कोई सम्बन्ध नहीं था। मार्गी संगीत भक्ति प्रधान है।

देशी संगीत अथवा गान → प्राचीन काल में जब ऋषियों ने यह अनुभव किया कि परमेश्वर-प्राप्ति के अतिरिक्त संगीत में जनरंजन की अपूर्व शक्ति है तभी से मार्गी संगीत के अतिरिक्त संगीत का दूसरा रूप प्रचार में आया। अब संगीत दो भागों में विभाजित हो गया था। पहला संगीत वह था जिसका उद्देश्य परमेश्वर-प्राप्ति था तथा दूसरा संगीत वह था जिसका उद्देश्य जन-मन-रंजन था। वह संगीत जिसका उद्देश्य जन-मन-रंजन था वह देशी संगीत कहलाया।

देशी संगीत का उद्देश्य जन-मन-रञ्जन था इसलिए लोक-रुचि के अनुसार उसमें अनेक परिवर्तन होने लगे। भिन्न-भिन्न प्रान्तों में कालानुसार इस संगीत में अन्तर आने लगा। विद्वानों का विचार है कि मार्गी संगीत में परिवर्तन करके देशी संगीत की उत्पत्ति हुई। देशी संगीत परिवर्तनशील होने के कारण वेद-कालीन संगीत से बिल्कुल भिन्न हो गया। यहाँ तक कि आज जिस संगीत को हम सुनते अथवा गाते हैं वह सब उसकी परिवर्तनशीलता का परिणाम है। प्राचीन समय में देशी संगीत को 'गान' कहकर पुकारा जाता था। 'संगीत रत्नाकर' नामक पुस्तक में लिखा है:-

वाग्गेयकारों ने अपनी बुद्धि से प्राचीन निबद्ध संगीत में परिवर्तन करके एक नये संगीत की रचना की, जिसे गान अथवा देशी संगीत कहते हैं।

आज का आधुनिक संगीत अनेक परिवर्तनों का ही परिणाम है। प्राचीन समय में प्रबन्ध गायन का प्रचार था। प्रबन्ध गायन के पश्चात ध्रुपद गायन का जन्म हुआ। इस प्रकार देशी संगीत इसके पश्चात ख्याल और ठुमरी गायन का जन्म हुआ। इस प्रकार देशी संगीत विकास क्रम में आगे बढ़ता रहा, तथा समय-समय पर इसके स्वरूपों में भी परिवर्तन होता रहा। इन्हीं परिवर्तनों के कारण में देशी संगीत के दो रूप 'हिन्दुस्तानी पद्धति' और 'कर्नाटकी पद्धति' भी हम देखते हैं।

देशी संगीत (शास्त्रीय संगीत) के अतिरिक्त पूरे देश के सभी प्रान्तों में लोक संगीत विभिन्न प्रान्तों की भांति भिन्न-भिन्न रूपों में दिखायी पड़ता है। विभिन्न प्रान्तों की रीति-रिवाजों की झलक उनके लोकगीत में भी उसी प्रकार परिलक्षित होती है।

→ मार्गी और देशी संगीत में अन्तर →

1. मार्गी संगीत ईश्वर निर्मित है तथा इसका उद्देश्य ईश्वर प्राप्ति ही है। देशी संगीत मानव निर्मित है तथा इसका उद्देश्य लोकरंजन अथवा जनरंजन है।

2. मार्गी संगीत अचल है अर्थात इसमें परिवर्तन नहीं होते। देशी संगीत परिवर्तनशील है।

3. मार्गी संगीत अनेक कठोर नियमों से बंधा है तथा उसमें गायक को स्वतन्त्रता कदापि नहीं होती। देशी संगीत के नियम अधिक कठोर

नहीं है, तथा उसमें गायक अथवा वादक को अधिक स्वतंत्रता प्राप्त है। जनरुचि के अनुसार इसके नियम बदलते रहते हैं।

4. मार्गी संगीत 'शब्द' प्रधान है, देशी संगीत स्वर प्रधान है।

5. मार्गी संगीत आजकल प्रचलित नहीं है।

Ques:23 Uttar Bhartiya Sangeet (Hindustani Shastriya Sangeet) and Dakshin Bhartiya Sangeet Paddhti

→ भारत में दो संगीत - पद्धतियाँ प्रसिद्ध है -

1. कर्नाटिकी संगीत - पद्धति ।
2. हिन्दुस्तानी संगीत - पद्धति ।

'कर्नाटिकी संगीत पद्धति' को 'दक्षिणी संगीत पद्धति' भी कहते हैं। यह तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल तथा आन्ध्र प्रदेश की ओर प्रचलित है। इस प्रकार 'हिन्दुस्तानी' संगीत पद्धति को 'उत्तरी' या 'उत्तर भारतीय संगीत पद्धति' कहते हैं। यह दक्षिण भारत को छोड़कर शेष समस्त भारत में प्रचलित है। वास्तव में इन दोनों संगीत पद्धतियों के मूल सिद्धान्तों में विशेष अंतर नहीं है। क्योंकि दोनों का आधार ग्रन्थ शारङ्गदेव रचित 'संगीत रत्नाकर' है। इन दोनों पद्धतियों में वर्तमान काल में जो समानता और भिन्नता है, वह इस प्रकार है !—

→ हिन्दुस्तानी संगीत

1. हिन्दुस्तानी संगीत में केवल गीत की बंदिश निबद्ध रूप में गायी जाती है और अन्य सम्पूर्ण विस्तार अनिबद्ध रूप में किया जाता है।

2. हिन्दुस्तानी संगीत स्वर - प्रधान होता है।

3. गीत गाते समय ही आलाप, बोल-तान, तथा तान इत्यादि प्रकारों का प्रयोग में लाया जाता है।

4. विलंबित ख्याल की लय, अति विलिंम्बित होती है।

Scanned with CamScanner

5. हिन्दुस्तानी संगीत का स्वरूप अनिबद्ध होने के कारण तबले पर ताल के ठेके का अखंड रूप से बजते रहना अत्यन्त ज़रूरी होता है।

6. ध्रुपद, धमार, ख़याल, भजन या ठुमरी इत्यादि शैलियों के गायन का प्रदर्शन किया जाता है।

→ कर्नाटिक संगीत

1. कर्नाटिक संगीत मुख्यतः निबद्ध रूप से गाया जाता है।

2. कर्नाटिक संगीत लय-प्रधान अथवा ताल-प्रधान होता है।

3. गीत गाते समय केवल संगतियाँ, नेरावल और सरगम का प्रयोग होता है तथा आलाप या तान नहीं ली जाती।

4. सभी गीतों की लय मध्यलय में रहती है।

5. कर्नाटिक संगीत का स्वरूप निबद्ध होने के कारण मृदंगम पर इसकी ताल का उपयोग संगीत का सौंदर्य बढ़ाने की दृष्टि से किया जाता है और ठेका बंद होने पर भी गायन को कोई नुकसान नहीं पहुँचता।

6. रागम, तानम, पल्लवी तथा कीर्तन या कृति का प्रदर्शन किया जाता है।

Scanned with CamScanner

→ समानता।

1. दोनों ही पद्धतियों में शुद्ध और विकृत मिलाकर कुल बारह स्वर स्थान है।

2. दोनों ही पद्धतियों में बारह स्वरों से ठाठ या मेल पद्धति के आधार पर रागों की उत्पत्ति होकर संगीत में उनका प्रयोग किया जाता है।

3. दोनों पद्धतियों में आलाप-गान स्वीकार किया जाता है।

4. दोनों में ही आलाप एवं तानों के साथ चीजे गाई जाती है।

5. जन्य-जनक (ठाठ-राग) का सिद्धान्त दोनों में ही स्वीकार किया गया है।

→ विभिन्नता

1. उतरी संगीत-पद्धति और दक्षिणी संगीत-पद्धति में यद्यपि स्वर-स्थान ही माने गए हैं, किन्तु दोनों के स्वर तथा नामों में अंतर है।

2. उतरी संगीत-पद्धति में केवल दस ठाठों से रागों की उत्पत्ति हुई है, दक्षिणी-पद्धति में बहत्तर जनक ठाठों या मेलों का प्रणाम मिलता है।

3. दक्षिणी संगीत-पद्धति की चीजे कन्नड़, तेलगु, तामिल इत्यादि भाषाओं में हुई होती हैं और उत्तर संगीत-पद्धति के गीत ब्रज भाषा, हिन्दी, उर्दू, मारवाड़ी तथा भोजपुरी इत्यादि भाषाओं में होते हैं

Scanned with CamScan

4. दोनों पद्धतियों के ताल भिन्न-भिन्न होते हैं,

5. दोनों पद्धतियों के प्रायः अपने-अपने स्वतन्त्र राग हैं, अर्थात् अधिकांश दक्षिणी राग उत्तरी रागों में समानता नहीं रखते। अपवाद स्वरूप कुछ ही दोनों पद्धतियों के समान हैं।

6. दक्षिणी संगीत-पद्धति के शुद्ध स्वर सप्तक को कनकांगी अथवा मुखारी में कहते हैं, किन्तु उतरी संगीत-पद्धति के शुद्ध स्वर-सप्तक को बिलावल कहा जाता है।

उतरी और दक्षिणी स्वरों की तुलना

उतरी तथा दक्षिणी दोनों ही पद्धतियों में एक सप्तक में बारह स्वर माने गए हैं, किन्तु उनके नामों में कहीं-कहीं परिवर्तन हो गया है जैसे कर्नाटकी शुद्ध रे तथा ध हमारी हिन्दुस्तानी संगीत-पद्धति के कोमल रे तथा ध के समान है और शुद्ध रे तथा ध उनके शुद्ध म, तथा नि है

	हिन्दुस्तानी (उत्तरी) स्वर	कर्नाटकी (दक्षिणी) स्वर
1.	सा	सा
2.	कोमल रे	शुद्ध रे
3.	शुद्ध रे	पंचश्रुति रे अथवा शुद्ध ग
4.	कोमल ग	पंचश्रुति रे, साधारण ग
5.	शुद्ध ग	अंतर ग

Scanned with CamScan

6.	शुद्ध म	शुद्ध म
7.	तीव्र म	प्रति म
8.	प	प
9.	कोमल ध	शुद्ध ध
10.	शुद्ध ध	पंचश्रुति ध अथवा शुद्ध नि
11.	कोमल नि	षट्श्रुति ध अथवा कौशिक नि
12	शुद्ध नि	काकली नि

हमारे कोमल रे तथा ध उनके शुद्ध रे तथा ध है हमारे शुद्ध रे और ध उनके शुद्ध ग ओ नि है, अत! उनके (कर्नाटकी) स्वरो के अनुसार शुद्ध स्वर-सप्तक इस प्रकार होगा।-

सा रे ग म प ध नि - कर्नाटकी

सा रे रे म प ध ध - हिन्दुस्तानी

उपयुक्त कर्णाटकी शुद्ध सप्तक को दक्षिणी विद्वान 'मरवारी मेल' कहते है। कर्नाटकी स्वरों में किसी स्वर को कोमल अवस्था में नही माना जाता है, अर्थात उसके शुद्ध स्वर ही सबसे नीचे न हटकर ऊपर को जाते है, जैसे शुद्ध 'रे' के आगे उनका चतु:श्रुतिक 'रे' आता है, उसी को वे शुद्ध 'ग' कहते है और शुद्ध 'ग' के आगे साधारण 'ग', फिर अंतर 'ग' नाम उन्होंने दिए है!

६ पूर्वांड़ और उत्तरांड़ कहते है। 2

इस प्रकार दिन तथा रात के २४ घंटों को भी दो भागों में बाँट दिया है — पहला भाग पूर्वांड़ 12 बजे दिन से 12 बजे रात तक तथा दूसरा भाग उत्तराड़ में 12 बजे रात से दूसरे दिन के 12 बजे दिन तक होता है।

पूर्व राग :→ जिन रागों के वादी स्वर सप्तक के पूर्वांड़ में अर्थात् सा रे ग म स्वरों मे होते है ये पूर्वांड़ वादी राग अथवा पूर्व राग कहलाते है। रागों के गाने का समय 12 बजे दिन से 12 बजे रात तक होता हैं। उदाहरण के लिए – राग खमाज का वादी स्वर गान्धार है इसलिए यह पूर्व राग हुआ और इसे 12 बजे दिन से 12 बजे रात के अन्दर ही गाया - बजाया जाता है।

उतर राग :→ किसी राग के वादी स्वर सप्तक के उत्तराड़ अर्थात् 'प ध नि सा' स्वरों से होते हैं वे उतराड़ वादी राग अथवा उतराड़ राग कहलाते हैं। इन रागों के गाने का समय 12 बजे रात से 12 बजे दिन (दोपहर) तक होता है। उदाहरण के लिए – राग भैरवी में धैवत स्वर वादी है इसलिए यह उतराड़ वादी या उतराड़ है और इसके गाने का समय भी 12 बजे रात से 12 बजे दोपहर के अन्दर है।

परन्तु हिन्दुस्तानी अनेक राग इस नियम के अपवादस्वरुप हैं। कहने का